धर्म और आध्यात्मिकता की तुलना

प्रायः आपने देखा ही होगा कि लोग धर्म को एक विवाद के विषय के रूप में लेते रहते हैं। उसे उन चीज़ों के साथ जोड़ देते हैं, जो समाज के मान्यताओं को कहीं न कहीं ठेस पहुँचाती हैं। कुछ रीति-रिवाज, परम्पराएँ जीवन में ज़रूरी हैं, लेकिन उसे सही समझ ना होने के साथ कुरेदा जाना ठीक नहीं है। वहीं आध्यात्मिकता एक धर्मनिरपेक्ष मान्यता है।

किसी ने धर्म को परिभाषित करते हुए कहा है कि धर्म एक उच्च, अदृश्य शक्ति के बारे में आस्था, उसकी पहचान तथा जागृत अवस्था है, जिसके साथ संवेदना जुड़ी हुई हो। नैतिकता को भी इसमें शामिल किया जाता है। यदि इसकी गहराई को देखें तो धर्म, पूरे वहाँ के भौगोलिक क्षेत्र (Geographical Area), वहाँ की सम्पूर्ण आबादी, उसकी प्रथाओं को पूर्णत: प्रभावित करता रहता है।

धर्म का कहना है कि मन, जो सांसारिक लिप्साओं के पीछे भागता रहता है, उससे मनुष्यों को निकाल उसे ईश्वर प्राप्ति का मार्ग सुझाता है। धर्म मनुष्यों के आपसी सम्बन्धों का विश्लेषण करता है, तथा कहता है कि जीवन में उच्च लक्ष्य प्राप्त कैसे किया जाए। धर्म कर्मकाण्डों से ऊपर है। धर्म सर्वोच्च स्वरूप से सम्पर्क का एक नाम है। धर्म आध्यात्मिक क्रियाशीलता का नाम है, जिसके आधार से सत्य की लड़ाई लड़ी जाती है। धर्म, पारिवारिक न होकर व्यवहारिक होता है। यह जीवन का एक विज्ञान है। माना जाये तो सच्चा धर्म धार्मिक एवं दार्शनिक मान्यताओं से अलग होता ही है। धर्म का अर्थ लोगों को सुकून पहुँचाना है, ना कि अलग करना। यह लोगों को बांटता नहीं है, बल्कि जोड़ता है। आज इसका स्वरूप विपरीत है। लोग अपने अपने वर्ग की अपनी अपनी शर्तों एवं मान्यताओं के आधार से एक-दूसरे को बांट रहे हैं। इसके आधार से अंधविश्वास एवं कर्मकाण्ड जन्म लेते रहते हैं। आज का धर्म यही है।

वहीं आध्यात्मिकता, शुद्ध विचारों और श्रेष्ठ भावनाओं की पराकाष्ठा का नाम है। आध्यात्मिकता लोगों की, आत्मा और शरीर के अलग अस्तित्व की व्याख्या करता है। स्वयं और परमात्मा की शुद्ध पहचान का नाम आध्यात्मिकता है। शरीरों को देखते-देखते हमारे अंदर कुछ ऐसा बढ़ने लगा है, जिससे हम विकारों की तरफ बढ़ते चले गए। आध्यात्मिकता हमें यह सिखाती है कि शरीर को चलाने वाली शक्ति आत्मा सभी के अन्दर है, जिससे हम हर पुरुष-स्त्री को उससे अलग महसूस कर सकते हैं। सभी को आत्मा देखने से हमारी फीलिंग बदल जाती है। आत्मा

के मूल गुण प्रेम, शांति, शक्ति, पवित्रता का हम अनुभव करने लग जाते हैं।

आध्यात्मिकता, विज्ञान, धर्म, दर्शन का समूल स्वरूप है। यह हमें भौतिकवादी संसार की विकृतियों और मान्यताओं से हमेशा हमेशा के लिए अलग करने में विश्वास रखता है। यह सबके जीवन में विखंडन के स्थान पर एकता एवं शांति लाने का कार्य करता है। यह एक वैश्विक मान्यता में विश्वास करता है, ताकि एक मूल्य को सभी अपनायें, कुछ अलग ना हो, सब कुछ एक जैसा हो। यह वैज्ञानिक रीति ऐसी सही हो। इसलिए धर्म से आध्यात्मिक ज्ञान किसी भी प्रकार के पूर्वाग्रह से मुक्त होता है। यह पराभौतिक शक्तियों (मेटाफिज़िकल ऊर्जा) के सिद्धान्तों को स्पष्ट कर, एक ऐसा मार्ग सुझाता है जिस पर चलकर मनुष्य एक सर्वोच्च स्थिति को प्राप्त कर सकता है। व्यभिचार, बुराई को छोड़ने तथा स्व परिवर्तन की प्रेरणा देता है। कभी भी उन मान्यताओं को नहीं मानता जो संसार व समाज ने बनाए हैं। अपनी इच्छाओं तथा अपनी कर्म इंद्रियों को अपने वश में करने का एक सुगम मार्ग आध्यात्मिकता है।

- ब्र.कु. अनुज,दिल्ली

यदि विज्ञान और धर्म का सम्पूर्ण समन्वय है, तो वो आध्यात्मिकता ही है। कोई इसको सम्पूर्ण रीति से समझे तो जीवन में हर स्तर पर वह सफल होगा। तन, मन से स्वस्थ होगा। चेतना का स्तर इतना ऊँचा हो जायेगा कि कुछ भी भौतिक जगत का उसे अच्छा नहीं लगेगा। लगाव से मुक्ति आध्यात्मिकता की पहली परख है। जीवन में स्थिरता और शांति का एक मूल आधार आध्यात्मिकता है।

उपलब्ध पुस्तकें जो आपके जीवन को बदल दे

मन की बात

- राजयोगी ब्र.कु. सूर्य

प्रश्नः- ईश्वरीय शक्तियों का कोई चमत्कारिक अनुभव किसी का हो तो हम उसे जानना चाहेंगे?

उत्तरः- एक कुमार कुछ दिन पूर्व ही मेरे पास आया और बताया कि मुझे बहुत समय से गले में तकलीफ थी, मैंने आपको फोन किया था। आपने जो विधि बताई, उससे दो दिन में ही गला ठीक हो गया। विधि थी - पानी को दृष्टि देकर 7 बार संकल्प करना कि मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ... फिर इस संकल्प से पीना कि इस पानी को पीने से मेरे गले की तकलीफ ठीक हो जाए। हुआ न वायब्रेशन्स का चमत्कारिक प्रभाव...।

प्रश्नः- हमारे नगर में सेवाएं वृद्धि को नहीं पातीं। यहां की भूमि बड़ी कलराठी है, हम क्या करें....?

उत्तरः- आपने अपने अन्तर्मन में यह संकल्प भर लिया है कि यहां सेवा नहीं बढ़ती। इस संकल्प से ही सेवा रुक गई है। देवी-देवता धर्म की आत्माएं तो आपके नगर में भी हैं। आज से संकल्प बदलो। सोचो कि मैं इष्ट देवी हूँ..... जहां मैं होऊंगी वहां मेरे भक्त व अनेक देवात्माएं आयेंगी ही। मुझे रेगिस्तान में भी हरियाली लानी है। मैं असम्भव को सम्भव करके दिखाऊंगी।

रोज़ सवेरे अपने अन्तर्मन को संकल्प दो कि अब इस नगर में अनेक आत्माएं बाबा के बच्चे बनने हैं। एक विज़न अपने अन्तर्मन को दिखाओ कि मैं 2 साल बाद मुरली सुना रही हूँ और सामने 100 भाई-बहनें बैठे हैं। प्रतिदिन यह सीन स्वयं के अन्तर्मन को दिखाओ तो वह इसे स्वीकार कर लेगा। यदि आपका सम्पूर्ण विश्वास होगा तो ऐसा ही होगा। बस आवश्यकता है कि मन में निगेटिव संकल्प को प्रवेश नहीं होने देना।

प्रश्नः- बाबा ने कहा है कि सकाश देने की सेवा में लग जाओ तो तुम निर्विघ्न बन जाएंगे, सकाश देने से क्या लाभ होगा ?

उत्तरः- सकाश देने की सेवा करने से सर्वप्रथम हमारा योग-अभ्यास सरल हो जाएगा। दूसरा - जीवन की परेशानियाँ, उलझनें, अकेलापन व बन्धन भी समाप्त हो जाएंगे।

तीसरा - हमारे पावरफुल वायब्रेशन्स से विश्व की अनेक आत्माओं को सहयोग मिलेगा जो कि बहुत बड़ा पुण्य होगा। ऐसा पुण्य सदा करने से पाप कर्मों का दबाव कम होगा और जीवन के विघ्न व बन्धन भी कट जाएंगे।

प्रश्नः- बच्चे के शारीरिक व मानसिक विकास के लिए हम क्या अभ्यास करें जिससे वह अन्य बच्चों की तरह सामान्य रूप से व्यवहार करे?

उत्तरः- अपने बच्चे के ब्रेन को नॉर्मल करने के लिए यह निम्नलिखित प्रयोग करें - बच्चे को जो भी आप खाने के लिए, पीने के लिए देते हैं वह चार्ज करके देना है। चार्ज करने की विधि है - पानी या दूध या खाने की कोई भी चीज़ उसको दृष्टि देते हुए सात बार संकल्प करें मैं परम पवित्र आत्मा हूँ, फिर इसके बाद संकल्प करना कि इसे ग्रहण करने से उसका ब्रेन नॉर्मल हो रहा है।

सुबह-शाम बच्चे के ब्रेन को एनर्जी देना है - इसकी विधि है - अपने दोनों हाथ मलते हुए सात बार संकल्प करें... मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ फिर दोनों हाथ बच्चे के ब्रेन पर दाएं-बाएं रख दें। ऐसा पाँच बार सुबह और पाँच बार शाम को करें। ऐसा इक्कीस दिन तक करें, बच्चा नॉर्मल व्यवहार करने लग जाएगा।

Contact e-mail
bksurya8@yahoo.com

जकातवाडी-सातारा। डॉ.मारुती साळवी को आध्यात्मिक ज्ञानचर्चा के पश्चात् ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु.शांता।

मुम्बई। 'सत्यमव जयते' आध्यात्मिक कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए राजयोगी ब्र.कु.बृजमोहन,संपादक प्योरिटी। साथ हैं ब्र.कु.गोदावरी तथा अन्य अतिथिगण।